Chapter 2

bihar board 9th class hindi notes भारत का पुरातन विद्यापीठ नालंदा

लेखक परिचय

- राजेंद्र प्रसाद

भारत का पुरातन विद्यापीठ नालंदा

डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 ई. को सारण जिला(बिहार)की जीरादेई गांव में हुआ था। इनके पिता महादेव सहाय फारसी एवं संस्कृत के अच्छे जानकार थे । वे पहलवानी और घुड़सवारी के शौकीन थे । इन दोनों विषयों की शिक्षा उन्होंने अपने पुत्र राजेंद्र प्रसाद को दी । सबसे पहले उनका नामांकन छपरा के हाई स्कूल में हुआ और वहां वह आठवें दर्जे में रखे गए जो उस स्कूल के शिक्षा क्रम में सबसे नीचे का दर्जा था । वार्षिक परीक्षा में हुए प्रथम आए, स्कूल के प्राचार्य ने प्राप्तांक से प्रसन्न होकर दूहरी प्रोन्नति दी । 1902 ई. में वे कलकता विश्वविद्यालय की मैट्रिकुलेशन परीक्षा में प्रथम आए ।उसके बाद आई.ए. , बी. ए. ,और बी. एल. प्रेसिडेंसी कॉलेज से किया। 1981 में कलकता के वकील दल में शामिल हुए। 1916 ई. में जब पटना में एक अलग न्यायालय स्थापित हुआ तब वे वकालत करने के लिए पटना चले आए।
डॉ राजेंद्र प्रसाद का राजनीतिक जीवन उत्कृष्ट रहा । वे संविधान सभा के प्रथम स्थाई अध्यक्ष हुए ।स्वाधीनता के बाद 1950 में भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति हुए । कलकता में वे जब छात्र थे। तो उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना घटी बंग-भंग आंदोलन । इसकी प्रतिक्रिया में देश में व्यापक उत्तेजना छा गई । बिहार टाइम्स के संपादक महेश नारायण और सच्चिदानंद सिन्हा का सहारा पाकर राजेंद्र प्रसाद ने 'बिहार स्टूडेंट्स कॉन्फ्रेंस' की स्थापना की । राजेंद्र प्रसाद कलकता में हिंदी विद्वानों की संगति में आए और उनके सक्रिय सहयोग से 'अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना हुई। उनके लेखन की प्रक्रिया आजीवन चलती रही 28 फरवरी 1983 में उनका निधन हो गया।

निबंध का सारांश

भारत का पुरातन विद्यापीठ नालंदा भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखित निबंध है जिसमें उसके गौरवशाली अतीत को प्रकट किया गया है । नालंदा ज्ञान के क्षेत्र में एशिया महाद्वीप में अद्वितीय था । लगभग 600 वर्ष तक नालंदा एशिया का चैतन्य केंद्र बना रहा । मगध की प्राचीन राजधानी राजगीर से नालंदा 7 मील उत्तर की ओर बसा है ।नालंदा का प्राचीन इतिहास भगवान बुद्ध और महावीर के समय तक जाता है ।यहां देश-विदेश के कई छात्र उस समय शिक्षा ग्रहण के उद्देश्य से आते थे। उनमें चीन से फाहियान और युवानचांग नामक यात्री आए थे । सातवीं सदी में हर्षवर्धन के काल में नालंदा अपनी उन्नति के शिखर पर था। नालंदा का शिक्षाक्रम बड़ी व्यावहारिक बुद्धि से तैयार किया गया था। उसे पढ़कर विद्यार्थी दैनिक जीवन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करते थे । उस समय के तत्कालीन विद्वानों में योग शास्त्र के सबसे बड़े विद्वान शीलभद्र माने जाते थे । साहित्य और धर्म के अतिरिक्त नालंदा कला का भी एक प्रसिद्ध केंद्र था। जिसने अपना प्रभाव नेपाल,तिब्बत , हिंदेशिया एवं मध्य एशिया की कला पर डाला । नालंदा की कांचा कौनसे-कौनसे कांस्य मूर्तियां अत्यंत सुंदर और प्रभावोत्पादक है। डॉ राजेंद्र प्रसाद की इच्छा थी कि कला-शिल्प, साहित्य धर्म, दर्शन और ज्ञान का एक बड़ा केंद्र नालंदा पुनर्स्थापित स्थापित हो।

https://www.evidyarthi.in/